वो जो सीखता है, लेकिन विचार नहीं करता है, खो देता है।
वो जो सोचता है, लेकिन सीखता नहीं है, महान खतरे में है ...

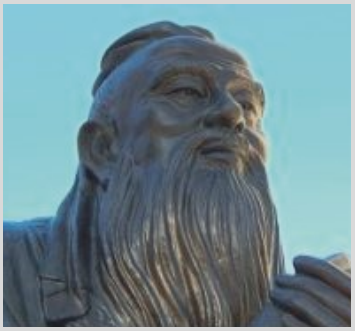

जीवन वास्तव में आसान है, लेकिन हम इसे जटिल बनाने पर जोर देते हैं। व्यक्ति जितना अधिक अच्छे विचारों पर मनन करेगा, उसकी दुनिया बेहतर होगी और उसकी दुनिया व्यापक होगी। अगर आप रुकते नहीं हो, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने धीरे चले। अगर आपको उत्कृष्ट भविष्य का निर्माण करना है, तो अतीत का अध्ययन करें। विनम्रता सभी गुण का ठोस आधार है।

कनफ्यूशियस

जिस समय भारत में भगवान महावीर और बुद्ध धर्म के संबध में नए विचार रख रहे थे, चीन में भी एक सुधारक का जन्म हुआ, जिसका नाम **कन्फ्यूशियस** था। उस समय चीन में झोऊ राजवंश का बसंत और शरद काल चल रहा था। समय के साथ झोऊ राजवंश की शक्ति शिथिल पड़ने के कारण चीन में बहुत से राज्य कायम हो गए, जो सदा आपस में लड़ते रहते थे, जिसे झगड़ते राज्यों का काल कहा जाने लगा। अतः चीन की प्रजा बहुत ही कष्ट झेल रही थी। ऐसे समय में चीनवासियों को नैतिकता का पाठ पढ़ाने हेतु महात्मा कन्फ्यूशियस का आविर्भाव हुआ। इनका जन्म ईसा मसीह के जन्म से करीब 550 वर्ष पहले चीन के शानदोंग प्रदेश में हुआ था। बचपन में ही उनके पिता की मृत्यु हो गई। उनके ज्ञान की आकांक्षा असीम थी। बहुत अधिक कष्ट करके उन्हें ज्ञान अर्जन करना पड़ा था। 17 वर्ष की उम्र में उन्हें एक सरकारी नौकरी मिली। कुछ ही वर्षों के बाद सरकारी नौकरी छोड़कर वे शिक्षण कार्य में लग गए। घर में ही एक विद्यालय खोलकर उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षा देना प्रारंभ किया। वे मौखिक रूप से विद्यार्थियों को इतिहास, काव्य और नीतिशास्त्र की शिक्षा देते थे। काव्य, इतिहास, संगीत और नीतिशास्त्र पर कई पुस्तकों की रचना भी किए।

53 वर्ष की उम्र में लू राज्य में एक शहर के वे शासनकर्ता तथा बाद में वे मंत्री पद पर नियुक्त हुए। मंत्री होने के नाते इन्होंने दंड के बदले मनुष्य के चरित्र सुधार पर बल दिया। कन्फ्यूशियस ने अपने शिष्यों को सत्य, प्रेम और न्याय का संदेश दिया। वे सदाचार पर अधिक बल देते थे। वे लोगों को विनयी, परोपकारी, गुणी और चरित्रवान बनने की प्रेरणा देते थे। वे बड़ों एंव पूर्वजों को आदर–सम्मान करने के लिए कहते थे। वे कहते थे कि दूसरों के साथ वैसा बर्ताव न करो, जैसा तुम स्वयं अपने साथ नहीं करना चाहते हो।

कन्फ्यूशियस, एक सुधारक थे, धर्म प्रचारक नहीं। उन्होंने ईश्वर के बारे में कोई उपदेश नहीं दिया, परन्तु फिर भी बाद में लोग उन्हें धार्मिक गुरू मानने लगे। इनकी मृत्यु 480 ई. पू. में हो गई थी। कन्फ्यूशियस के समाज सुधारक उपदेशों के कारण चीनी समाज में एक स्थिरता आयी। कन्फ्यूशियस का दर्शन शास्त्र आज भी चीनी शिक्षा के लिए पथ प्रदर्शक बना हुआ है।

कन्फ्यूशियस ने कभी भी अपने विचारों को लिखित रूप देना आवश्यक नहीं समझा। उसका मत था कि वह विचारों का वाहक हो सकता है, उनका सृष्टा नहीं। वह पुरातत्व का उपासक था, कयोंकि उसका विचार था कि उसी के माध्यम से यथार्थ ज्ञान प्राप्त प्राप्त हो सकता है। उसका कहना था कि मनुष्य को उसके समस्त कार्यकलापों के लिए नियम अपने अंदर ही प्राप्त हो सकते हैं। न केवल व्यक्ति के लिए, वरन् संपूर्ण समाज के सुधार और सही विकास के नियम और स्वरूप प्राचीन महात्माओं के शब्दों एवं कार्यशैलियों में प्राप्त हो सकते हैं। कन्फ्यूशियस ने कोई ऐसा लेख नहीं छोड़ा, जिसमें उसके द्वारा प्रतिपादित नैतिक एवं सामाजिक व्यवस्था के सिद्धांतों का निरूपण हो। किन्तु उसके पौत्र त्जे स्जे द्वारा लिखित 'औसत का सिद्धांत' (अंग्रेजी अनुवाद, डाक्ट्रिन ऑव द मीन) और उसके शिष्य त्साँग सिन द्वारा लिखित 'महान् शिक्षा' (अंग्रेजी अनुवाद, द ग्रेट लर्निंग) नामक पुस्तकों में तत्संबंधी समस्त सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। 'बसंत और पतझड़' (अंग्रेजी अनुवाद, स्प्रिंग ऐंड आटम) नामक एक ग्रंथ, जिसे लू का इतिवृत्त भी कहते हैं, कन्फ्यूशियस का लिखा हुआ बताया जाता है। यह समूची कृति प्राप्त है और यद्यपि बहुत छोटी है, तथापि चीन के संक्षिप्त इतिहासों के लिए आदर्श मानी जाती है।

■ **हमारी सर्वोच्च महिमा, कभी नहीं गिरने में नहीं है, बल्कि हमारे हर बार गिर कर उठने में है।**

■ मैंने सुना और मैं भूल गया। मैंने देखा और मुझे याद हो गया। मैंने किया और मैं समझ गया।

■ **जहाँ कहीं भी तुम जाओ, अपने पूरे दिल से जाओ।**

■ लोगों की केवल बुद्धिमता और बेवकूफी कभी नहीं बदलती।

■ **जब क्रोध बढ़े, परिणामों के बारे में सोचें।**

■ यह मानकर ज्ञान प्राप्त करो कि आपको कभी इस पर महारत हासिल नहीं होगी, इसे यह मानकर पकड़ो कि आपको इसे खो जाने का डर हो।

■ **आप अपना सम्मान करो, तो दूसरे आपका सम्मान करेंगे।**

■ वो जो सीखता है, लेकिन विचार नहीं करता है, खो देता है! वो जो सोचता है, लेकिन सीखता नहीं है, महान खतरे में है।

■ **जीवन वास्तव में आसान है, लेकिन हम इसे जटिल बनाने पर जोर देते हैं।**

■ जीतने की इच्छाशक्ति, सफल होने की इच्छा, अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने की प्रेरणा, ये तीनों व्यक्तिगत उत्कृष्टता के द्वार खोलने की कुंजियाँ हैं।

■ **अगर आप रुकते नहीं हो, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने धीरे चले।**

■ हर चीज में सौन्दर्य होता है, पर हर एक को नहीं दिखाई देता है।

■ **ऐसी जॉब का चयन करें, जिससे आपको प्यार हो, तो आपको अपने जीवन में एक दिन भी काम नहीं करना पड़ेगा।**

■ हम तीन तरीकों से ज्ञान ग्रहण कर सकते हैं। पहला चिंतन के द्वारा, जो उत्कृष्ट है। दूसरा अनुकरण के द्वारा, जो सबसे आसान है और तीसरा अनुभव के द्वारा, जो सबसे कटु है।

■ **मौन एक सच्चा मित्र है, जो कभी धोखा नहीं देता है।**

■ सफलता पूर्व की तैयारी पर निर्भर करती है और इस तरह की तैयारी के बिना विफलता निश्चित है।

■ **नफरत करना आसान है और प्यार करना मुश्किल है। चीजों की पूरी योजना ऐसे ही काम करती है। सभी अच्छी चीजों को हासिल करना मुश्किल है और बुरी चीजें बहुत आसानी से मिल जाती हैं।**

■ अच्छी तरह से शासित देश में, गरीबी के लिए शर्मिंदा होना पड़ता है। बुरी तरह से शासित देश में, संपत्ति के लिए शर्मिंदा होना पड़ता है।

■ **मैं दो अन्य पुरुषों के साथ चल रहा हूँ, तो उनमें से प्रत्येक मेरे शिक्षक के रूप में काम करेगा. मैं एक से अच्छी बातों का चयन करूंगा और उनका अनुकरण करूंगा और अन्य की बुरी बातों का चयन करूंगा और अपने आप में उन्हें सही करूंगा।**

■ अगर आप एक साल लिए सोचते हैं, तो एक फसल के बीज बोयें, अगर आप दस साल लिए सोचते हैं, तो पेड़ लगायें और अगर आप 100 साल लिए सोचते हैं, तो लोगों को पढायें।

■ **अगर आपको उत्कृष्ट भविष्य का निर्माण करना है, तो अतीत का अध्ययन करें।**

■ श्रेष्ठ व्यक्ति हमेशा धर्माचरण का सोचता है। आम आदमी आराम की सोचता है।

■ **व्यक्ति जितना अधिक अच्छे विचारों पर मनन करेगा, उसकी दुनिया बेहतर होगी और उसकी दुनिया व्यापक होगी।**

■ जीवन की उम्मीदें कर्मठता पर निर्भर है। एक मैकेनिक को अपने काम में खरा उतरने के लिए, पहले अपने उपकरणों को तेज करना जरुरी है।

■ **विनम्रता सभी गुण का ठोस आधार है।**

■ सतर्क शायद ही कभी गलती करता है।

■ **बिना नुक्स के एक कंकड़ की तुलना में नुक्स के साथ एक हीरा बेहतर है।**

■ आप क्या जानते हैं और आप क्या नहीं जानते हैं, का पता होना, ही सच्चा ज्ञान है।

■ **तुम बिना कुछ सीखे एक किताब नहीं खोल सकते हो।**

■ एक श्रेष्ठ व्यक्ति अपने भाषण में संकोची, लेकिन अपने कार्यों में आगे रहता है।

■ **एक दमनकारी सरकार एक बाघ से ज्यादा भयभीत रहती है।**

■ सही क्या है, का सामना होने, बावजूद पूर्ववत इसे छोड़ना साहस की कमी को दर्शाता है।

■ **घर की एकता से ही राष्ट्र को ताकत मिलती है।**

■ जब यह स्पष्ट है कि लक्ष्यों को हासिल नहीं सकते हो, तो लक्ष्यों को समायोजित मत करो, कार्रवाई की युक्तियों को समायोजित करो।

■ **उस आदमी को तलवार कभी मत दो, जो नृत्य नहीं कर सकता हो।**

■ वो जो सदगुणों के माध्यम से सरकार चलता है, की तुलना उत्तर ध्रुवीय स्टार की जा सकती है, जो अपनी जगह रहता है और सभी स्टार्स उसकी ओर मुड़ जाते हैं।

■ केवल सम्मान की भावना ही आदमी को जानवरों से अलग करती है।

■ सभी परिस्थितियों में पाँच चीजों का अभ्यास सही सद्गुण का गठन करता है। ये पाँच चीजें गुरुत्व, आत्मा की उदारता, नेकनीयती, गंभीरता, और दया हैं।

■ **मृत्यु और जीवन के अपने नियोजन निर्धारित हैं, सम्पति और सम्मान भगवान पर निर्भर करते हैं।**

■ बुढ़ापा, मुझे विश्वास है, एक अच्छी और सुखद बात है। यह सच है कि धीरे–धीरे चीजें आपके हाथ से निकल जाती हैं, लेकिन फिर भी दर्शक के रूप में आपको एक आरामदायक अग्रिम स्थान दिया जाता है।

■ **श्रेष्ठ व्यक्ति अपनी क्षमता की सीमाओं से व्यथित होता है। वह इस तथ्य से परेशान नहीं होता है कि लोगों को उसकी क्षमता की पहचान नहीं है।**

■ ज्ञान, करुणा, और साहस लोगों के तीन सार्वभौमिक मान्यता प्राप्त नैतिक गुण हैं।

■ **एक सज्जन अपने कर्मों का अपने शब्दों से मेल नहीं होने पर शर्मिंदा होगा।**

■ एक श्रेष्ठ व्यक्ति के दोष सूर्य और चंद्रमा की तरह होते हैं। वे उनके दोष हैं और हर कोई उन्हें देखता है, वे बदल सकते हैं और हर कोई उनसे प्रेरणा लेता है।

❁❁

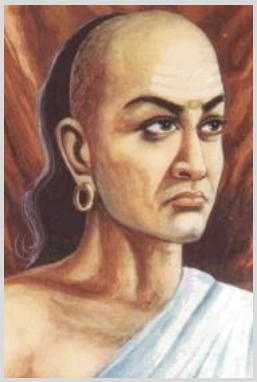

बुद्धिमान व्यक्ति का कोई दुश्मन नहीं होता है...

कोई भी व्यक्ति अपने कार्यों से महान होता है, अपने जन्म से नहीं। शिक्षा, इंसान का सबसे अच्छा दोस्त है। एक शिक्षित इंसान हर जगह सम्मान पाता है, शिक्षा सुन्दरता को भी पराजित कर सकती है। हर एक दोस्ती के पीछे अपना खुद का स्वार्थ छिपा होता है, स्वार्थ के बिना कभी कोई दोस्ती नहीं होती, ये एक कटु सत्य है। जमा पूँजी ये होने वाले खर्चो में से ही बचायी जाती है वैसे ही जैसे आने वाला ताजा पानी, निष्क्रिय पानी को बहाकर बचाया जाता है। हंस वहीं रहते हैं, जहाँ पानी हो और वह जगह छोड़ देते है, जहाँ पानी खत्म हो गया हो। क्यों न ऐसा इंसान भी करे, प्रेमपूर्वक आये और प्रेमपूर्वक जाए।

आचार्य चाणक्य

■ मुर्ख लोगों से वाद–विवाद नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से हम अपना ही समय नष्ट करते हैं।

■ **आलसी मनुष्य का वर्तमान और भविष्य नही होता है।**

■ डर को नजदीक न आने दो, अगर यह नजदीक आ जाए, तो इस पर हमला कर दो।

■ **भगवान मूर्तियों में नहीं बसता, बल्कि आपकी अनुभूति ही आपका ईश्वर है और आत्मा आपका मंदिर।**

■ भाग्य उनका साथ देता है, जो कठिन परिस्थितयों का सामना करके भी अपने लक्ष्य के प्रति ढृढ़ रहते हैं।

■ **मनुष्य स्वयं ही अपने कर्मों के द्वारा जीवन मे दुःख को बुलाता है।**

■ जो तुम्हारी बात को सुनते हुए इधर–उधर देखे, उस आदमी पर कभी भी विश्वास न करें।

■ **दूसरों की गलतियों से सीखो अपने ही ऊपर प्रयोग करके सीखने पर तुम्हारी आयु कम पड़ जाएगी।**

■ कभी भी अपनी कमजोरी को खुद उजागर न करो।

■ **कोई भी व्यक्ति ऊँचे स्थान पर बैठकर ऊँचा नहीं हो जाता, बल्कि हमेशा अपने गुणों से ऊँचा होता है।**

■ बुद्धि से पैसा कमाया जा सकता है, पैसों से बुद्धि नहीं।

■ **दण्ड का डर नहीं होने से लोग गलत कार्य करने लग जाते हैं।**

■ बहुत से गुणों के होने के बाद भी सिर्फ एक दोष सब कुछ नष्ट कर सकता है।

■ **अगर कुबेर भी अपनी आय से ज्यादा खर्च करने लगे, तो वह भी कंगाल हो जाएगा।**

■ दुश्मन द्वारा अगर मधुर व्यवहार किया जाए, तो उसे दोष मुक्त नहीं समझना चाहिए।

■ **किसी भी अवस्था में सबसे पहले माँ को भोजन कराना चाहिए।**

■ सभी प्रकार के डरों में सबसे बड़ा डर बदनामी का होता है।

■ **बुद्धिमान व्यक्ति का कोई दुश्मन नहीं होता है।**

■ जो व्यक्ति शक्ति न होने पर मन में हार नहीं मानता, उसे संसार की कोई भी ताकत परास्त नहीं कर सकती।

■ **कोई भी शिक्षक कभी साधारण नहीं होता, प्रलय और निर्माण उसकी गोद मे पलते हैं।**

■ कोई जंगल सारा जैसे एक सुगंध भरे वृक्ष से महक जाता है, उसी तरह एक गुणवान पुत्र से सारे कुल का नाम बढ़ता है।

■ **खुद का अपमान करवा के जीने से तो अच्छा है, मर जाना, क्योंकि प्राणों को त्यागने से एक ही बार कष्ट होता है, पर अपमानित होकर जिंदा रहने से बार–बार कष्ट होता है।**

■ आपसे दूर रहकर भी दूर नहीं है और वही जो आपके मन में नहीं है, वह आपके नजदीक रहकर भी दूर है।

■ **संतुलित दिमाग जैसी कोई सादगी नहीं, संतोष जैसा कोई सुख नहीं, लोभ जैसी कोई बीमारी नहीं और दया जैसा कोई पुण्य नहीं है।**

■ एक अनपढ़ व्यक्ति का जीवन उसी तरह होता है, जैसे की किसी कुत्ते की पूंछ जो न ही उसके पीछे का भाग ढकती है और न ही उसे कीड़ों से बचाती है।

■ **जैसे ही भय आपके करीब आये, उस पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दीजिये।**

■ जो लोगों पर कठोर से कठोर सजा को लागू करता है, वो लोगों की नजर में घिनौना बनता जाता है। जबकि जो नरम सजा लागू करता है, वह तुच्छ बनता है, लेकिन जो योग्य सजा को लागू करता है, वह सम्माननीय कहलाता है।

■ **जब कोई सजा थोड़े मुआवजे के साथ दी जाती है, तब वह लोगों को नेकी करने के लिए निष्ठावान एवं पैसे और खुशी कमाने के लिए प्रेरित करती है।**

❁❁

चिंतन :

राजेन्द्र माथुर

गाय के बारे में आजकल जो विवाद चल रहे हैं, वह दरअसल केवल गाय का नहीं है। प्रश्न यह है कि पतन और विदेशी शासन के हजार वर्षों में जो विकृत, कुंठित व्यक्तित्व हमारा बना है, क्या उसे ही हम अपनी विरासत मानते हैं? हम इतने दिनों से लकवाग्रस्त हैं कि लकवे को हम विरासत मानने लगे हैं और जब हमारे अंग-प्रत्यंग में सामान्य स्पन्दन होता है, तो हम समझते हैं कोई अप्राकृतिक घटना हो रही है। स्वास्थ्य हमें चौका देता है, क्योंकि बीमारी हमारा स्थायी भाव हो गया है। एक बीमार देश न अपनी रक्षा कर सकता है, न गायों की। गौ पूजा दरअसल गौ-उपेक्षा का दूसरा नाम है और उसका बहाना है। भारत में जब किसी की हमें उपेक्षा करनी होती है, तो हम उसकी पूजा शुरु कर देते हैं। जैसे हम महात्मा गांधी की आजकल पूजा कर रहे हैं। यह इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि महात्मा गांधी हमारे मन के किसी तार को झंकृत नहीं करते। वे अवतार और देवता हो चुके हैं और हमने तय कर लिया है कि उन्हें ताख में रखेंगे, उनके आसपास अगरबत्ती जलाएंगें, लेकिन उनके रास्ते पर चलेंगे नहीं। गाय को भी हम माता मानेंगे, लेकिन अपनी उपेक्षा से उसके कंकाल बना देंगे। मूलतः यह रवैया अधार्मिक और अनार्य है, लेकिन वह भारतीय है। भारत मूलतः एक अनार्य और अधार्मिक देश है।

गौ पूजा और गौ उपेक्षा

आर्यों के जमाने में गाय एक कविता थी, लेकिन भारत के पतन के साथ वह एक धर्म बन गई। आर्यों के जमाने में भारत स्वयं एक महाकाव्य था, जबकि आज जो हिन्दुस्तान हम देखते हैं, वह उस महाकाव्य का सड़ा, बुसा फफूंद लगा संस्करण है। जो लोग इस देश में भारतीयता की रक्षा का नारा लगा रहे ळें, वे दरअसल उस हिन्दुस्तान की रक्षा करना चाहते हैं, जिसका पिछले हजार वर्षों में अचार डल चुका है। वे गलत हैं, बेहद गलत हैं। हिन्दुस्तान का उद्धार तो सचमु तभी होगा, जब हम इन हजार वर्षों को अपने दिमाग की बर्नी से निकाल फेंकेंगे।

धर्म और कविता में अन्तर स्पष्ट है। कविता हृदय की सहज संवेदना है (इस घिसी-पिटी परिभाषा के लिए पाठक क्षमा करें) जबकि धर्म एक रुढ़ि है। कविता एक झरना है, जबकि धर्म उस झरने की यादव दिलाने वाला सूखा, रेतीला रास्ता है। भारत एक धार्मिक देश है, जिसने अपनी कविता खो दी है। जब हम उस कविता की पुर्नप्राप्ति का प्रयत्न करेंगे, तो धर्म की सीमाएं तड़केंगी और विरोध होगा। लेकिन हम चाहे अपने ऋृग्वेदकालीन गौरव को प्राप्त करना चाहें या बीसवीं शताब्दी के विज्ञान से कदम मिला कर चलना चाहें, यह स्पष्ट है कि भारत को अपनी कविता पुनः प्राप्त करनी होगी। आर्यों के जमाने में गाय इसलिए एक कविता थी कि वह यायावर-युग और कृषि युग के बी का संधि काल था और घुमक्कड़ मानव के लिए खेती स्वयं कविता की वस्तु थी। आज हम एक-दूसरे संविधान की देहली पर खड़े हैं, जो कृषि युग और उद्योग युग का संधि काल है। क्या पुराने प्रतीकों और उपमानों से हम आज के युग की कविता गढ़ सकते हैं?

भारत में गाय के महत्व के बारे में सबसे अच्छा स्पष्टीकरण प्रसिद्ध लेखक **नीरद चौधरी** ने दिया है, जिनकी एक किताब, ''**द कांटिनेंट आफ सरसी**'' इसी साल (1967) प्रकाशित हुई है। श्री चौधरी इस देश को सरसी का महाद्वीप मानते हैं। ***यूनानी दंतकथाओं में सरसी एक जादूगरनी का नाम है, जो एक खूबसूरत द्वीप पर अपने महल में रहती थी। उसके पास ऐसी जड़ी-बूटियाँ और जन्तर-मन्तर थे, जिससे वह आदमी को सूअर बना सकती थी। एक बार तूफानों से मजबूर होकर यूनानी महाकाव्यों का नायक ओडीसियस सरसी के द्वीप के किनारे जा लगा। द्वीप के किनारे पहुँच कर उसने देखा कि एक पहाड़ी के ऊपर धुआं निकल रहा है। इन्सान की बस्ती जान कर उसने अपने आधे साथियों को वहां तलाश करने भेजा। वे गये और पहाड़ी पर उन्हें संगमरमर का एक भव्य महल मिला, जिसकी रक्षा पालतू शेर और भेड़िये कर रहे थे। उन्होंने कुत्तों की तरह दुम हिला कर उनका स्वागत किया। महल के अन्दर एक सुन्दर महिला बैठी थी, जो चरखा चला रही थी और गा रही थी। उसने नम्र शब्दों में उनका स्वागत किया। सब लोग तो चले गए, लेकिन दल के नेता को कुछ शंका हुई और वह बाहर ही रहा। महल की देवी ने उन्हें जड़ी-बूटी मिला हुआ भोजन कराया और वे अपने देश को भूल गए। फिर उसने अपना***

जादू का डंडा घुमाया और वे सब तत्काल सुअर बन गए। दल के नेता ने यह भयावह समाचार ओडीसियस को पहुंचाया। वह आया, उसने जड़ी-बूटी वाला भोजन भी किया, लेकिन उसे वरदान था, इसलिए उसे कुछ भी नहीं हुआ। सरसी इस दिव्य पुरुष से अत्यन्त प्रभावित हुई और उसने सूअरों को फिर से आदमी बना दिया। साल भर तक वे उस द्वीप पर सानन्द रहे।

स्पष्ट ही श्री चौधरी की राय में सरसी हिन्दुस्तान की देवी है। यह देश एक महल है, जिसमें बहादुर आर्य लोग आए और अब उन्हें एक वरदानी ओडीसियस की प्रतीक्षा है, जिस पर सरसी का जादू न चले और जो अपने पतित साथियों को फिर से आदमी बनाए।

गायों के बारे में श्री चौधरी के तर्क बिल्कुल मौलिक और प्रभावशाली हैं। वे लिखते हैं कि गाय आर्यों के साथ भारत आई। आर्यों का सौंदर्य बोध बहुत विकसित था और गायों और बैलों की सुन्दरता से वे बहुत प्रभावित थे। दरअसल एक हृष्ट-पुष्ट गाय से अधिक सुन्दर जानवर इस दुनिया में है भी नहीं। उसका चिकना सफेद रंग, तीखे नाक नक्श, विवेकमयी भावभंगिमा उसे एक अजीब सतयुगी सात्विकता प्रदान करते हैं। वही एक जानवर है, जो सबसे कम जानवर लगती है और अपने पशुत्व से ऊपर उठी हुई प्रतीत होती है। आर्यों का कवि हृदय इस जानवर की सुन्दरता के प्रति और भी चेतन इसलिए था कि भारत का गर्म मौसम उसके लिए अनुकूल नहीं था। भंगुर सौंदर्य का जादू एकाएक कई गुना बढ़ जाता है। आज भी गाय के आंखों में झांको, तो एक रहस्यमयी करुणा उसके चेहरे पर नजर आती है, मानो वे कह रही हैं कि मैं सरसी के देश में निर्वासित हूं। इस देश में गाय और आदमी का भाईचारा दरअसल निर्वासितों का भाईचारा है। जनसंघ के अंधविश्वासी लोग कहते हैं कि गाय भारतीय संस्कृति की अंग है, तो वह जानते नहीं कि अनजाने में कितनी बड़ी सच्चाई कह गये हैं। दरअसल आज हिन्दुस्तान की वही शक्ल है, जो उसकी गायों की है। हम गायों की तरह मरियल हैं और हमारी हड्डियां निकल रही हैं। जो हाल आर्य गायों की सन्तानों का है, वही आर्य-पुरुषों की सन्तानों का भी है।

लेकिन भारत के गर्म और आलसी मौसम में (श्री चौधरी कहते हैं) कविता ज्यादा समय तक जीवित नहीं रह सकती। गाय धीरे-धीरे आर्यों का कुल स्मारक बनने लगी और पूजी जाने लगी। जब भावनाएं जड़ एवं भ्रष्ट हो जाती हैं, तब पूजा शुरु हो जाती है। जब हम कविता की तीव्रता और ताजगी लेते हैं और उस भावना को बनाए नहीं रख पाते, तो हम रुढ़ि अपना लेते हैं और उस भावना को खोखली श्रद्धांजलि अर्पित करने लगते हैं, जो किसी समय थी।

अगर हम आज के हिन्दुस्तान में गाय को उसका सही स्थान देना चाहते हैं, तो पहली जरुरत यह है कि पूजा के घुटन भरे दायरे से निकाल कर उसे सौंदर्य और उपयोगिता के स्तर पर प्रतिष्ठित करें। जिस देश की खेती गिरी हुई, जहां दूध मिलावट का हो और घी गायब होता जा रहा हो, जहां दुनिया की सबसे ज्यादा गायें सबसे कम दूध देती हों, वहां गौ पूजा बेमतलब, बेजान चीज है। गौ पूजा दरअसल गौ-उपेक्षा का दूसरा नाम है और उसका बहाना है। भारत में जब किसी की हमें उपेक्षा करनी होती है, तो हम उसकी पूजा शुरु कर देते हैं। जैसे हम महात्मा गांधी की आजकल पूजा कर रहे हैं। यह इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि महात्मा गांधी हमारे मन के किसी तार को झंकृत नहीं करते। वे अवतार और देवता हो चुके हैं और हमने तय कर लिया है कि उन्हें ताख में रखेंगे, उनके आसपास अगरबत्ती जलाएंगें, लेकिन उनके रास्ते पर चलेंगे नहीं। गाय को भी हम माता मानेंगे, लेकिन अपनी उपेक्षा से उसके कंकाल बना देंगे। मूलतः यह रवैया अधार्मिक और अनार्य है, लेकिन वह भारतीय है। भारत मूलतः एक अनार्य और अधार्मिक देश है। सरसी के चंगुल में हमने अपना मूल स्वरुप खो दिया है। भारत में गया, बीता, घिघियाता जीवन ही मूल्य है, लेकिन जिन्दादिली मूल्य नहीं है, अच्छा जीवन मूल्य नहीं है। मरने से तो गया बीता जीवन ही अच्छा है, यह हमारा उद्देश्य वाक्य है। क्या कुरुक्षेत्र में कृष्ण ने यही उपदेश दिया था?

गाय के बारे में आजकल जो विवाद चल रहे हैं, वह दरअसल केवल गाय का नहीं है। प्रश्न यह है कि पतन और विदेशी शासन के हजार वर्षों में जो विकृत, कुंठित व्यक्तित्व हमारा बना है, क्या उसे ही हम अपनी विरासत मानते हैं? हम इतने दिनों से लकवाग्रस्त हैं कि लकवे को हम विरासत मानने लगे हैं और जब हमारे अंग-प्रत्यंग में सामान्य स्पन्दन होता है, तो हम समझते हैं कोई अप्राकृतिक घटना हो रही है। स्वास्थ्य हमें चौका देता है, क्योंकि बीमारी हमारा स्थायी भाव हो गया है। एक बीमार देश न अपनी रक्षा कर सकता है, न गायों की।

प्रस्तुति : डॉ. सरोज कुमार,
मनोरम, 37, पत्रकार कॉलोनी, इन्दौर
मो. : 094066 22290

❁❁

(यह लेख 'नईदुनिया' इन्दौर में 08 जनवरी 1967 को प्रकाशित हुआ था।)

इसलिए लिखता हूँ.... मैं कविता में व्यक्त होने के लिए अभिशप्त हूँ

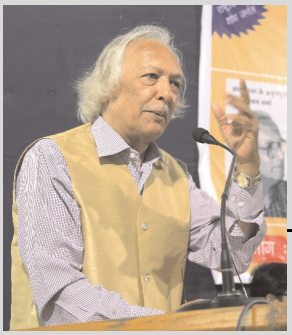

मैं मनुष्य की अपार क्षमताओं में विश्वास करता हूँ। मैं आशावादी हूँ। मैं संसार को उतना बुरा नहीं पाता हूँ, जितना बुरा रोज़ आने वाले अख़बारों में पढ़कर लग सकता है। संसार के बेहतर बनाने-बनने की अभी काफी संभावनाएँ हैं - ऐसा मेरा विश्वास है। मनुष्य ही शूद्र लक्ष्यों के कारण दूरगामी उन्नति और विकास में बाधक है। कोई शक्ति बाहर से आकर उसे सहायता देने वाली नहीं है। मेरी कविता का मनुष्य भी मुझ जैसा आप पायेंगे। मैं अपनी ज़मीन पर खड़ा हूँ। न कालातीत, न देशातीत। कविता मेरे लिए एक मानवीय प्रयत्न है।

जन्म : 02 जनवरी 1938. शिक्षा - एम.ए., एल.एल.बी., पी-एच.डी., लम्बे समय तक महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में प्राध्यापन। दैनिक 'नईदुनिया' में 10 वर्षों तक आठवें दशक में चर्चित कविता स्तम्भ 'स्वान्तः दुखाय' लिखा। अनेक सम्मानों से सम्मानित।

■ **प्रो.डॉ.सरोज कुमार**

आपका प्रश्न कि मैं कविता क्यों लिखता हूँ। यूं देखने में सरल प्रतीत होता है, किन्तु वास्तव में है नहीं, जो काम सुपरिभाषित कारणों से किए जाते हैं, उनके बारे में सरल होता है, यह बता दिया जाना कि इन-इन कारणों से वे किए जा रहे हैं, किन्तु लिखने के कारण ऐसी स्थूलता से नहीं बताया जा सकता है। बताने की कोशिश ज़रुर की जा सकती है। मैं भी वही कर रहा हूँ। मुझे मालूम है जो भी बताऊंगा, अपूर्ण रहेगा। उसके आसपास का ही वह हो सकेगा जो कि बताया जाना चाहिए, जो कोशिश के बाद भी बताया नहीं जा पाता।

जो साफ-साफ अनुभव करता हूँ, वह है सुख, जो कविता लिखने पर मुझे मिलता है। यों सुख तो कई बातों से मिलता है, पर कविता लिखने पर मिलने वाले सुख की अनुभूति शब्दातीत है। इस सुख को किसी भावनात्मक दंश से मुक्ति के सुख के समीप रखा जा सकता है।

कविता मुझे अपने आप की जकड़नों से मुक्त कर देती है। मैं सुविधा और स्वेच्छा से जब भी चाहूं तब कविता लिखकर मुक्त नहीं हो सकता। छटपटाहट, लगता है - खुद ऐसा खेल खेती है कि मुझे कविता लिखना जरुरी लगने लगता है...और तब लिखना मुझे राहत देता है। मैं कोई बहुत बड़ा कवि नहीं हूँ, इसलिए कई बार लगता है कि बिते भर का कवि होकर भी जब मुझे ऐसी बेचैनियाँ और छटपटाहट उद्विग्न कर देती है, तो बड़े कवियों का क्या हाल होता होगा?

पर जब मैं यह कहता हूँ कि छटपटाहटें खुद ऐसा खेल खेती हैं कि मेरे लिए कविता लिखना जरुरी हो जाता है, तो यह कहना प्रकारांतर से कविता लिखने की अपनी विवशता को ही रेखांकित करता है। पर यह विवशता, हवा और पानी की तरह नहीं है, क्योंकि यह भौतिक या स्थूल विवशता नहीं है। इसका सुभाव भावनात्मक है। किसी अन्य उपयुक्त शब्द के अभाव में मैं उसे 'शौक' या 'हॉबी' भी कह सकता हूँ, जिस रिश्ते से कविता लिखना मुझे प्रिय लगता है बेट या रैकेट की तरह कलमको चाहे जब या किसी निर्दिष्ट नियमित समय नहीं उठाया जा सकता। कविता का समय अहर्निश खुला होता है, फिर चाहे कविता महीनों क्यों न लिखी जाए।

वृक्ष जिस तरह स्वयं को फूलों और फलों में व्यक्त करने के लिए नैसर्गिक रुप से सिद्ध है, उस स्तर पर तो नहीं, पर आंशिक रुप से जरुर मुझे लगता है कि मैं कविता में व्यक्त होने के लिए अभिशप्त हूँ।

सुखों के कई स्वाद हैं और अभिव्यक्तियों के अनेक रुपाकार, किन्तु मुझे उन सबसे हटकर यदि कविता में व्यक्त होकर ही मुक्ति और सुख मिलता है, तो यह इसी बात का प्रमाण है कि यह मार्ग मेरे लिए प्रकृति ने चुना है, जो निर्वैकल्पिक है, कविता मेरे लिए कभी-कभी प्रयत्न बन जाती है, मनवांछित संसार को परिभाषित करने और पाने का कभी मैं उसमें सपने देखताहूँ, जो प्रकारांतर से अप्राप्य और वांछित संसार के प्रतिरुप ही होते हैं। जो मैं पाना चाहता हूँ। उसे पाने की कोशिश में जिस माध्यम से कर सकता हूँ, वह कविता के अतिरिक्त कोई अन्य माध्यम मेरे लिए नहीं है। कई बार अपनी कविता को लिख चुकने के बाद उसे अपने ही खिलाफ खड़ी पाता हूँ। अंततः कवि मनुष्य होता है ओर मनुष्य खंड-खंड में खंडित है। वह संसार में रहता है, संसार के कसाई खाने में। यहाँ मनुष्य को अगर जिंदा रहनाहै, तो वह भावनात्मक रुप से बिना कटे-पिटे और खंड-खंड हुए नहीं रह सकता, पर कविता की नाराजी में भी एक सुख मिलता है। यह भी शब्दातीत है। कविता कभी मेरे लिए औजार बन जाती है। कभी अलंकरण, पर स्वयं उसे ऐसा नहीं बनाता। जिन्हें मैं उनकी ओर से लड़ता प्रतीत होता हूँ, वे उसे औजार कह देते हैं और जिन्हें वह तरह-तरह से रंजक लगती है, उनके बहाने वह मेरा अलंकरण है। मेरे तई तो बस इतनाहै कि कविता मेरी जरुरत है। याने अपने उस होने के लिए जरुरी जो दूसरों के लिए नहीं, केवल अपने लिए जरुरी होता है। मैं पुनः कहना चाहूंगा कि मैं कविता क्यों लिखता हूँ, यह कह पाना बहुत कठिन है, कुछ...यही कही यहाँ हैं, कुछ मेरी ये कविता कह देगी -

कविता नहीं है
मेरी विवशता / हवा और पानी की तरह
कविता नहीं है मेरा धर्म / बहाई या इस्लाम की तरह
कविता नहीं है मेरी रोटी / तनखा या घूस की तरह
कविता नहीं है मेरा शौक / टेनिस या शराब की तरह
कविता नहीं है मेरी दोस्त / बानी या बलबीर की तरह
कविता है मेरी कोशिश / पहाड़ों पर चढ़ाई की तरह
कविता है मेरा सपना / पेड़ पर फूलों की तरह
कविता है मेरी सुविधा / कुएँ की रस्सी की तरह
कविता है मेरी रचना / कबया के घोंसले की तरह
कविता है मेरी दुश्मन / कमरे के दर्पण की तरह।

❁❁

वरिष्ठ कवि सरोज कुमार की कुछ कविताएँ...

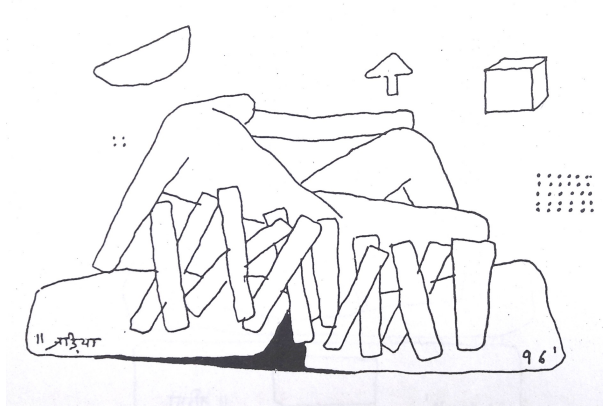

कोल्हू का वजन
(सन्दर्भ : जाट रे जाट)

वोट रे वोट ! बाँध ले लंगोट !
जनवरी के जाड़े में, उतर जा अखाड़े में !

तू ही तो राजा है ! गाजा है : बाजा है !
तू ही तो हीरा है, बाकी सब जीरो है !
सिंहासन तेरा है ! जाग, ये सबेरा है !
पीछे पछताएगा, कौन काम आएगा ?

तहस-नहस कर दे सब लूट और खसोट !
वोट रे वोट ! बाँध ले लंगोट !

सौ चूहे खाए हैं, फिर भी वे आए हैं !
दूध के नहाए हैं, वे भी तो आए हैं !
झण्डे भी आएँगे, पण्डे भी आएँगे,
मुर्गी भी आएगी, अण्डे भी आएँगे !

सब तुझको फाँसने जमाएँगे गोट !
वोट रे वोट ! बाँध ले लंगोट !

उन सबका मेला है ! रेला ही रेला है !
ये सब तो हैं जुलूस, सिर्फ तू अकेला है !
तू सबको तौल ले, मुँह अपना खोल ले !
यही ठीक मौका है, तू मन की बोल ले !

लोहा अब पिघला है, कर दे तू चोट !
वोट रे वोट ! बाँध ले लंगोट !
जनवरी के जाड़े में ! उतर जा अखाड़े में !

❁❁

भाग्यलिपि

प्लेटफार्म पर रखी
वजन तौलने की मशीन पर -
चढ़ गया कुत्ता !
मैंने कुतूहलवश
रुपैये का सिक्का
मशीन में डाल दिया !
टिकट निकला,
वजन आ गया था,
और पीछे छपी थी भाग्यलिपि :
आपकी वाणी में चमत्कार
शक्ति दाँतों में है,
भारत का प्रजातंत्र
आपके हाथों में है।

❁❁

एक सॉनेट : अब तो आवाज लगाता हूँ

रीत रीतकर दिन बीते फिर उखड़ा-उखड़ा मन रहा,
मैंने जो भी सोचा झूठा किया वकीली तर्कों ने !

मेरे हर निर्णय का मुझ पर ही झूठा बंधन रहा,
और सत्य को फाँसी दे दी बात बात के फर्कों ने !

लगा कि दुनिया के हाटों में टके सेर पर हाल है,
आदर्शों में छीना झपटी गप्पों में प्रतियोगिता,

ऊसर जी भर पानी पीते हर बगिया कंगाल है,
ऐसे में कैसे कोई सकता है अच्छे दिन बिता ?

पर जब खड़ी सामने दीखी जीने की अनिवार्यता
सोचा आखिर क्यों दुनिया में पिछड़ूँ या पछताऊँ मैं
बीना उठाकर क्यों न बेसुरा बीच बजारे गाऊँ मैं
साँझ पड़े भैरवी छेड़ने वालों को जग पूछता !

गटापार्ची बबुए-सा कल तक था आज विधाता हूँ
कल सिर्फ पुकारा जाता था, अब तो आवाज लगाता हूँ !

❁❁

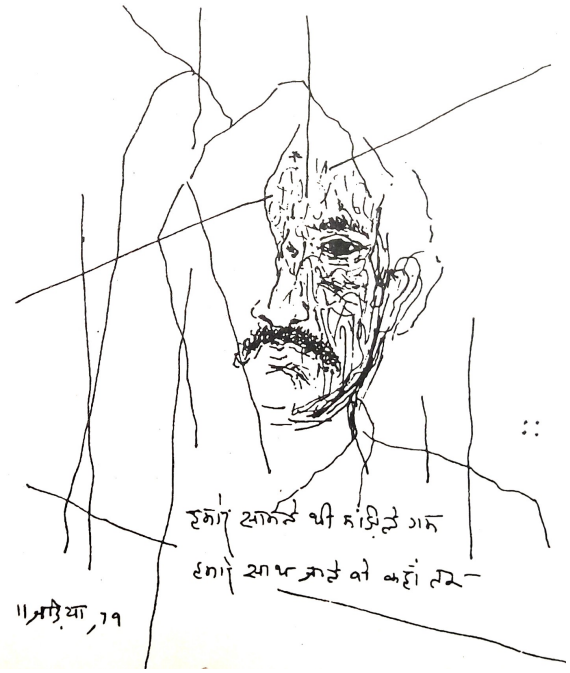

अस्पताल की शाम...

उढ़ा रही है कम्बल दिन को
मुस्काओ ऐ रोगी तिनको,
नर्स बनी-सी ड्यूटी पर यह
अस्पताल की शाम!

कलरव तुम चाहो चिल्लाओ
तुम पश्चिम के गम अरुणाओ,
यहाँ वार्ड की बन्द खिड़कियाँ
खुले द्वार बेकाम!
अस्पताल की शाम !

हम रोगी हैं क्या नसीब है
मौत यहाँ कितने करीब है,
चीखें, चिल्लाहटें, कराहें
और राम का नाम !
अस्पताल की शाम !

यह प्रकृति है, हम विकृति हैं
स्वयं डरे ऐसी आकृति हैं !
कड़वी दवा तीर-सी सुइयाँ -
अब थोड़ा आराम।
अस्पताल की शाम !

❁❁

शब्द तो कुली हैं

हर बीस कोस पर
बदल जाती है भाषा,
इधर, हर चौबीस घंटे में
बदल जाते हैं विचार!
ऐबों की तरह भाने लगते हैं
नए तर्क!
धीरे-धीरे ऐसा बदल जाता हूँ
कि जो था
सोच नहीं पाता, कि वो था!

क्या विचार को पकड़कर
बैठ जाऊँ?
जहाज का लंगर बनकर
इठलाऊँ?
दाद नहीं मिलती विचार-परायण को,
जहाज को क्यों न छोड़ा दूँ
समुंदर में
विजय यात्रा के प्रयाण में?

शब्द तो कुली हैं विचारों के
कुलियों के मुँह, मैं क्यों लगूँ,
कुलियों में पारिवारिक झगड़े,
मैं क्यों लडूँ?
कुली को भी क्यों लेना चाहिए
मेरी यात्रा में रुचि ?
क्यों पड़ना चाहिए फर्क
कि वो मेरी पेटी लादे है
या होल्डाल!

और यह भी मेरी चिंता है
कि मेरी पेटी में
क्या-क्या बंद है
और होल्डाल में
क्या बँधा है?

❁❁